त्रैमासिक पत्रिका अर्द्धसंयुक्तांक:27-28 वर्ष 2020 : आईएसएसएन: 2348-8662

कोरोना अर्द्धसंयुक्तांक विशेषांक 2020

जुलाई-दिसम्बर

वाद संवाद

Peer-Reviewed International Hindi Journal

साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका

कोरोना केन्द्रित अर्द्धसंयुक्तांक विशेषांक

प्रधान संपादक

डॉ. राम रतन प्रसाद

दिल्ली विश्वविद्यालय

संपर्क: 9871423939

वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक
PEER-REVIEWED JOURNAL

अंक-27-28
जुलाई-दिसम्बर, 2020
कोरोना केन्द्रित अर्द्धसंयुक्तांक विशेषांक
IMPACT FACTOR 7.5

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

अनुक्रम

	संपादकीय	(iii)
1.	कोरोना : एन आई ओपनर – डॉ. पवन सक्सेना	7
2.	कोरोना एक वैश्विक महामारी – सत्य नारायण मंडल	11
3.	कोरोना के परिप्रेक्ष्य में विश्व हताहत – डॉ. राम रतन प्रसाद	17
4.	कोरोना : समस्या और समाधान – डॉ. अंजली कायस्था	22
5.	कोरोना : एक विश्लेषण – डॉ. बृजेश कुमार	30
6.	कोरोना महामारी – डॉ. नीरु	35
7.	तहस-नहस की बहस : कोविड-19 के सन्दर्भ में – डॉ. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल	39
8.	कोविड-19 एवं उत्तराखण्ड के प्रवासी मजदूरों की संवेदना – डॉ. मुकेश कुमार भंडारी	44
9.	उत्तराखण्ड की जलवायु पर कोरोना वायरस का प्रभाव – डॉ. मीना	50
10.	कोलिफोर्निया में कोराना : पिता पुत्री के मध्य संवाद – डॉ. कुसुम लता	52
11.	कोरोनाकाल : पारिवारिक जीवन संबंधों का अध्ययन – डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी	58
12.	कोविड-19 एक चुनौती – डॉ. अनिल सिंह	61
13.	कोरोना काल में संजाल शिक्षा (Online Learning) की भूमिका – डॉ. प्रिया शर्मा	65

कोरोना काल में संजाल शिक्षा (Online Learning) की भूमिका

- डॉ. प्रिया शर्मा*

शिक्षक समाज की सर्वोत्तम कृति है। वह अपने युग का मार्गदृष्टा होता है और युगीन समाज को दिशा बोध देता है। विश्व में कोई भी देश हो, उसके निर्माण में शिक्षकों की विशेष भूमिका रही है। आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने विद्यार्थियों के बल पर अनाचारी नंदवंश के स्थान पर मगध में चंद्रगुप्त मौर्य को चक्रवर्ती सम्राट बनाया और भारत को एक राष्ट्र के रूप में पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया आरम्भ की। शिक्षा की महत्ता को ध्यान में रखते हुए संविधान की धारा-45 में शिक्षा में सार्वजनिकता का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, ताकि स्वतंत्र भारत का प्रत्येक नागरिक शिक्षित अथवा साक्षर हो। वर्तमान समय में कोरोना वायरस का संक्रमण काबू में नहीं आ रहा है जिसके कारण कक्षीय शिक्षा संभव नहीं है। अतः कोरोना के कारण वैकल्पिक रूप में ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता हो गई है। जिस प्रकार देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है। ठीक उसी प्रकार पठन-पाठन पर भी प्रभाव पड़ा है। विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों तक की शिक्षा प्रभावित हुई है। यही कारण है कि विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों ने जूम एप, गूगल क्लासरूम, स्काइप जैसे प्लेटफॉर्म के साथ-साथ यू ट्यूब, व्हाटसएप, मेल इत्यादि के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण का विकल्प अपनाया है। प्रश्न यह है करोना जैसे महामारी के आपातकालीन समय में विद्यार्थियों के कोर्स को कैसे पूरा किया जाए? यही कारण है कि ऑनलाइन शिक्षा शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एकमात्र विकल्प है। अगर शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा प्रदान न करते तो विद्यार्थियों का कोर्स पूरा होने में कठिनाई होती। करोना के व्यापक फैलाव के कारण केंद्र सरकार ने भी रूचि दिखाई है और शिक्षकों ने इस पद्धति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। करोना संकट के कारण शारीरिक दूरी बनाए रखकर तकनीकी माध्यम से शिक्षा प्रदान करना मज़बूरी भी हो गई है। यही कारण है कि ब्लैकबोर्ड से लेकर स्मार्टबोर्ड तक क्लासरूम टीचिंग को रुचिकर बनाने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

डिज़ीटल लाइब्रेरी प्रक्रिया भी ऑनलाइन शिक्षा पद्धति में लाभदायक सिद्ध हुई है। शिक्षकों के व्याख्यान रिकॉर्ड करना और ऑनलाइन उपलब्ध करवाना आदि सब तकनीक के कारण ही संभव हो सका है। मज़ेदार बात है कि शिक्षाविदों द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान देना, वैबनार करवाना आदि कार्यक्रम अधिकतम मात्रा में हो रहे हैं। प्रतिदिन राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैबनारों की झड़ी सी लग गई है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों द्वारा अनेकों कार्यक्रम ऑनलाइन चल रहे हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रतिदिन दीनदयाल उपाध्याय पीठ द्वारा फेसबुक माध्यम से आयोजित ऑनलाइन व्याख्यानमाला, महर्षि कणाद व्याख्यानमाला, डॉ. आम्बेडकर पीठ, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

* सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, शैक्षणिक खंड, धौलाधार परिसर